International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

"माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन"

शम्भु कुमार शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, पचामा (सीहोर)

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। इस हेतु न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों {शहरी क्षेत्र के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ)} का चयन कर उन पर डॉ. प्रवीण कुमार झा की 'पर्यावरण जागरूकता मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों में, ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर जागरूकता पाई गयी।

पर्यावरण ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है जो सम्पूर्ण मानव समाज का एकमात्र महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य भौतिक तत्वों–पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि से मिलकर पर्यावरण का निर्माण हुआ है। ऐसा वैज्ञानिक भी मानते है कि स्वस्थ पर्यावरण से स्वस्थ सृष्टि का सृजन होता है। पर्यावरण स्वस्थ सृष्टि की क्रियाशीलता एवं विकासशीलता को गति प्रदान करता है। इसलिये आवश्यक हो जाता है कि पर्यावरण के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सभी घटकों को परिशुद्ध रखा जाये। मानव समाज जितना उत्तरोत्तर विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उसने उतना पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन पर ध्यान नहीं दिया। उसके परिणामस्वरूप आज मानव समाज के समक्ष अनेकानेक लाइलाज बीमारियां, भूकम्प, ज्वालामुखी, बाढ़ आदि जैसी भयावह परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है तथा मानव की औसत आयु भी घट रही है। इन सबका मूल कारण मानव का पर्यावरण की मूल प्रकृति से विलग होना ही है। वर्तमान में मानव समाज के समक्ष प्रमुख चुनौती पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करना है।

आज लगभग सभी लोग पर्यावरण के बारे में बातचीत करते हैं, लेकिन केवल कुछ ही लोग ऐसे हैं जिन्हें यह पता है कि क्या करने की आवश्यकता है तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनको अभी इस क्षेत्र में

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वास्तविक अनुभव प्राप्त करना है। पर्यावरण जागरूकता अभियान को वास्तविक रूप में लोगों को शिक्षित करने के स्थान पर राजनैतिक लाभ के लिए अधिक प्रयोग किया गया। लगभग सभी वर्ग के लोगों ने पर्यावरण को वास्तविक जीवन की आवश्यकता न मानकर इसे फैशन के रूप में स्वीकार कर लिया है। जबकि इसके दुरूपयोग से हमारे जीवन तथा सुरक्षा दोनों को ही खतरा है।

अतः पर्यावरण जागरूकता के संबंध में ज्ञान देने की आवश्यकता है जिससे प्रकृति व मानव के मध्य असंतुलन असंरक्षण आदि गम्भीर समस्याओं का निराकरण हो सके। मनुष्य आज प्राकृतिक जीवन को छोड़कर कृत्रिम जीवन जीने के लिए बाध्य है, जिससे अनेकानेक समस्याएँ यथा – खाद्य पदार्थों का अभाव, कुपोषण, मृदा की विषाक्तता, ग्रीन हाउस प्रभाव, कार्बन डाई–ऑक्साइड के प्रतिशत में वृद्धि, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि में वृद्धि हुई है। वर्तमान में पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। अतः इसी कारण से शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने का निश्चय किया।

इस संदर्भ में अनेक शोध कार्य किए गये हैं जैसे **गुप्ता, यू.पी. तथा अन्य (1981)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि पर्यावरण जागरूकता के बारे में स्कूल जाने वाले ग्रामीण तथा शहरी बच्चों में अन्तर सार्थक था तथा यह स्कूल जाने वाले ग्रामीण बच्चों के पक्ष में था। **गुप्ता, अनु (2008)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया। **सिंधु, पूनम एवं सिंह, सुमन (2014)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं/विद्यार्थियों में, ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं/विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण शिक्षा के प्रति बेहतर जागरूकता पाई गई। **घोष, कुमुद (2014)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। **श्रीवास्तव, निशा (2015)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में अंतर पाया गया। क्षेत्र एवं लिंग की अतःक्रिया का पर्यावरण जागरूकता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। **बंगा, चमनलाल (2016)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश विद्यार्थियों में उच्च स्तर की पर्यावरण जागरूकता पाई गई तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता, शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों से बेहतर पाई गई।

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श :–

न्यादर्श के चयन के लिए भोपाल जिले में स्थित 04 माध्यमिक विद्यालयों (02 शहरी एवं 02 ग्रामीण क्षेत्र के) का चयन कर इन विद्यालयों की कक्षा 9वीं एवं 10वीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राओं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

उपकरण :–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा की 'पर्यावरण जागरूकता मापनी' का उपयोग किया गया है।

शोध विधि :–

सर्वप्रथम भोपाल जिले में स्थित समस्त माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से 04 माध्यमिक विद्यालयों (02 शहरी एवं 02 ग्रामीण) का चयन करके, इन विद्यालयों की कक्षा 9वीं एवं 10वीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों {शहरी क्षेत्र के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ)} का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर डॉ. प्रवीण कुमार झा की 'पर्यावरण जागरूकता मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर मॉस्टर शीट तैयार की गई। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण कर परिणाम प्राप्त किये गये तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

तालिका 01

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	निवास क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
छात्र	शहरी	50	37.04	7.62	1.57	> 0.05
	ग्रामीण	50	34.60	7.90		
छात्रा	शहरी	50	36.38	6.94	2.42	< 0.05
	ग्रामीण	50	32.80	7.86		
विद्यार्थी	शहरी	100	36.71	7.30	2.79	< 0.01
	ग्रामीण	100	33.70	7.93		

स्वतंत्रता के अंश 98, 198

0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98, 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता का मान – 2.63, 2.60

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.57 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम है जबकि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.42, 2.79 स्वतंत्रता के अंश क्रमशः 98, 198 पर सार्थकता के 0.05, 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1.98, 2.60 की अपेक्षा अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों में, ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर जागरूकता पाई गयी।

तालिका 02

माध्यमिक स्तर के शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

निवास क्षेत्र	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शहरी	छात्र	50	37.04	7.62	0.45	> 0.05
	छात्राएँ	50	36.38	6.94		
ग्रामीण	छात्र	50	34.60	7.90	1.14	> 0.05
	छात्राएँ	50	32.80	7.86		

स्वतंत्रता के अंश 98 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 0.45, 1.14 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक स्तर के शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों में, ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर जागरूकता पाई गयी।

2. माध्यमिक स्तर के शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

– संदर्भ ग्रन्थ सूची –

चक्रवर्त्ती, पुरूषोत्तम भट्ट (2006) **'पर्यावरण चेतना',** म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

गोयल, एम. के. (2007–08) **'पर्यावरण शिक्षा',** अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

जैन, एस.के. (2004) **'पर्यावरण शिक्षा',** अग्रसेन शिक्षा प्रकाशन, जयपुर

श्रीवास्तव, पंकज (2008) **'पर्यावरण शिक्षा',** म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

उपाध्याय, राधावल्लभ (2007–08) **'पर्यावरण शिक्षा',** अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

शर्मा, आर.ए. (2008) **'पर्यावरण शिक्षा',** आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

श्रीवास्तव, डी. एन. (नवीन संस्करण) **'सांख्यिकीय एवं मापन',** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

गुप्ता, अनु (2008) 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के मध्य पर्यावरण जागरूकता एवं संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन', Eduquest Vol.- I, April 2008, page no. 66-71.

पर्यावरण पत्रिका, (2006) राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, नागपुर

श्रीवास्तव, निशा (2015) 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता एक अध्ययन', *रिव्यु ऑफ रिसर्च, वॉल्युम 4, इस्यु 7, अप्रैल 2015, पेज नम्बर 1–5*

Buch, M.B. (1983-88) : **Fourth Survey of Research in Education,** National Council of Education Research and Training, New Delhi, Vol. I & II

Buch, M.B. (1988-92) : **Fifth Survey of Research in Education,** National Council of Education Research and Training, New Delhi, Vol. I & II

Banga, Chaman Lal (2016) "Environmental awareness among rural and urban government college students of Ludhiana District of Punjab (India)", *International Journal of multidisciplinary education and research, volume 1, issue 7, Sept. 2016, page no 21-24*

Ghosh, Kumud (2014) "Environmental Awareness among secondary school students of Galaghat District in the State of Assam and their Attitude towards Environment Education", *IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS), Volume 19, Issue 3, Ver. II, March 2014, Page No. 30-34*

Gupta, V. P., Grewal, J.S., Rajput, J.S. (1981) "A Study of the Environmental Awareness among Children of Rural and Urban Schools and Non-formal Education Centres", *Regional College of Education, Bhopal 1981 (NCERT-financed), in Third Survey of Research in Education (1978-1983), NCERT New Delhi, Page No. 537-538*

Sindhu, Poonam and Shingh, Suman (2014) "A Study of Awareness towards Environmental Education among the students at secondary Level in Gurgaon District", *International Journal of Scientific and Research Publication, Volume 4, Issue 1, January 2014, Page No. 1-4*